ग़ज़ल प्रकृति और उसका परिवर्तित रूप

डॉ. स्मृति शुक्ला
असिस्टेंट प्रोफेसर (प्रदर्शनकला) बी0 एड0 विभाग
एल0बी0एस0एम0पी0जी कॉलेज (सम्बद्ध– सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु)
आनन्दनगर, महाराजगंज, उत्तर प्रदेश
Email: smritimusic.bhu@gmail.com

ग़ज़ल एक ऐसी प्रेम और आनंद की बेल है, जो बंजर भूमि में भी उगकर वहाँ हरीतिमा की सृष्टि करने का सामर्थ्य रखती है। ग़ज़ल ने देशकाल एवं मानवीय विचार–धाराओं में आए हुए परिवर्तन को स्वीकार करते हुए अपनी विकास–यात्रा पूरी की है। यही कारण है कि कविता में रूचि ना रखने वाले व्यक्ति भी ग़ज़ल के शेर से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते। ग़ज़ल ने हमारे हृदय में आत्मसम्मान, प्रेम, दया, विनम्रता, भलाई, हमदर्दी तथा अनेकानेक मानवीय भावनाओं को उद्वेलित किया है। ग़ज़ल का एक–एक शेर हृदय में गहराई से उतरने का सामर्थ्य रखता है।[1] "ग़ज़ल हकीक़त में जज़्बात का मुरक्का (संग्रह) है। उसका हर शेर किसी इन्सानी जज़्बे की तस्वीर है और इन्सान के जज़्बात अपनी नैरंगियों (जुनून) में शुमार की हद में निकल जाते हैं।"[2]

किसी विषय या घटना को विस्तारपूर्वक प्रकट करने के लिए नज़्म का सहारा लेना पड़ता है पर किसी बात को संक्षिप्त रूप में कहने के लिए ग़ज़ल का आश्रय लिया जाता है। जहाँ प्रचार और सुधार की दृष्टि से नज़्म ही अच्छा साधन रही है वहाँ दिली जज़्बात को कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने के लिए ग़ज़ल से बेहतर और कुछ नहीं। ग़ज़ल में केवल प्यार और मुहब्बत ही चित्रित नहीं किये जाते बल्कि यह वह ब्रह्माण्ड है जिसमें सारा जगत समाया हुआ है। ग़ज़ल का शेर कण में संसार, बूंद में समुद्र और एक में अनन्त वाली बात है।

'दामने–इश्क में क़ोनैन सिमट आती है।
दोनों आलम की ख़बर हो, तो ग़ज़ल होती है।।'

यह शेर ग़ज़ल के असीम आकार को पूर्णतः स्पष्ट करता है। ग़ज़ल कविता का सर्वोत्तम, उन्नत और निखरा हुआ रूप है। ग़ज़ल का अस्तित्व आदि काल से किसी ना किसी रूप में कायम रहा है। ग़ज़ल का दायरा इतना विशाल है कि इसका अस्तित्व हर देश और हर भाषा में किसी ना किसी रूप में अवश्य मिलेगा। जैसे–

'इक मुइम्मा है समझने का ना समझाने का।
ज़िन्दगी काहे को है ख़्वाब है दीवाने का।।' – फ़ानी[3]

ग़ज़ल मुख्यतः श्रृंगारपरक गीत है। कालान्तर में उसमें वीर–करूणपरक गीतों की रचनाएँ होने लगी। इसकी शब्द रचना अत्यन्त मधुर होती है और विषय के किसी भी मार्मिक प्रसंग को चुनकर गीत

1 रोहिताश्व अस्थाना, हिन्दी ग़ज़ल, उद्भव और विकास, पृ0 – 136–137
2 डॉ0 मंसूद हसनः हमारी शायरी, पृ0 – 160
3 चानन गोविन्दपुरी, ग़ज़ल एक अध्ययन, पृ0 – 44–46

लिखे जाते हैं। इसमें शब्द–रचना की प्रधानता रहती है और राग, ताल प्रायः गौड़ हुआ करते हैं। विशेषकर दीपचंदी और पश्तो ताल इसकी प्रकृति के लिए उपयुक्त है। ग़ज़ल विशेषकर मध्यलय में बड़ी सुन्दर प्रतीत होती है।[4]

ग़ज़ल का अपना एक विशिष्ट ढांचा होता है। शेर में ख़्याल तभी अच्छा लगता है जब वह दिल की गहराइयों में उतर जाए, बार–बार पढ़ने के लिए प्रेरित करे। ग़ज़ल में शेर स्वतंत्र और सम्पूर्ण होता है। फ़िराक गोरखपुरी के अनुसार ग़ज़ल की प्रत्येक पंक्ति एक इकाई होती है और वह ज़िन्दगी के किसी न किसी विधान अथवा किसी सुनिश्चित एवं चित्ताकर्षक समस्या या दृश्य के विषय में पक्की राय देते हैं। ग़ज़ल के शेर जवाहरात के शेर की तरह होते हैं जिसमें सभी हीरे अपनी जगह पर जगमगाते हैं।[5]

शायरों ने ग़ज़लो में उन सभी विषयों को सम्मिलित किया जो अपने आसपास के वातावरण में देखा एवं महसूस किया और अपने इन अनुभवों को प्रत्यक्ष रूप में ना लिखकर परोक्ष रूप में लिखा जो कि ग़ज़ल की संरचना में ख़ास पहलू हैं। ग़ज़ल में प्रतीकों, बिम्बों व उपमाओं का प्रयोग किया जाता रहा है। पुराने प्रतीकों में शराब और वादा मोहब्बत के अर्थ में भी आता है। शमा खुदा के नूर के रूप में भी आती है। गौर से देखा जाए तो ग़ज़लों की विषय–वस्तु द्वारा सभी रसों की प्राप्ति होती है।[6] ग़ज़ल में हर प्रकार के ख़्याल व भाव को उचित स्थान और पूर्ण सत्कार प्राप्त है। यह एक ऐसा परिवार है जिसके व्यक्ति बेशक भिन्न–भिन्न विचारों के समर्थक हैं पर ऐसी भिन्नता उनमें अनजोड़ या दुश्मनी का कारण नहीं बनती बल्कि वे एक दूसरे के ख्याल को बड़ी दिलचस्पी से सुनते, आनन्द लेते व प्रशंसा करते हैं। अच्छे शेर की यही पहचान है कि वह दिल से निकले और दिल में उतरकर एक अनोखी लज्जत छोड़ जाए। शेर में प्रयोग किये गए शब्द बेशक किसी विशेष व्यक्ति, स्थान और स्थिति की ओर संकेत करते हों पर वह बातचीत मुख्यतः इन्सानियत की होती है जो हर समय हर युग में अपना उद्देश्य व अपना प्रभाव कायम रखती हैं। जैसे–

'ज़ाहिद शराब पीने दे मस्ज़िद में बैठकर।
या वो जगह बतादे कि जहाँ पर खुदा नहीं।।' – ज़ौक़[7]

ग़ज़ल की यह खूबी भी है कि यह उलझी हुई और गम्भीर समस्याओं को दो–चार शब्दों के माध्यम से सुलझा जाती है। एक सफल शेर की खूबी यह होती है कि उसमें दर्द की लय होती है और अर्थ की सत्ता। यही ग़ज़ल का मिज़ाज भी है जिसे अदृश्य शक्ति कह सकते हैं अर्थात् यह दिखाई नहीं देता लेकिन पढ़ते–सुनते हुए महसूस किया जा सकता है।[8]

उर्दू ग़ज़ल को चार रूपों में दिखाया जा सकता है पहला दक्खिनी ग़ज़ल, दूसरा अठारहवीं से उन्नीसवीं के पूर्वार्द्ध, तीसरा सैन्य विद्रोह से इक़बाल के युग तक तथा अन्तिम आधुनिक युग तक प्रस्तुत किया जा सकता है। इन सभी में ग़ज़ल के दो रंग एक–दूसरे के समानान्तर उभरते चले गए हैं। इनमें से एक रंग तो शुद्धतः कल्पना या मानसिक क्रियाशीलता का रंग है, दूसरा धरती पर उतरने और मूर्ति–पूजा के उद्देश्य को पूरी तरह ग्रहण करने का रंग है। ग़ज़ल का मूल रंग एवं शक्ति उपर्युक्त दोनों रंगों का संगम अर्थात् मिश्रण है एक कल्पना रूप जिसका अस्तित्व अनुमान पर एवं दूसरा मूर्त रूप जिसका अस्तित्व

4 हलधर प्रसाद 'इन्दु' ग़ज़ल अंक, ग़ज़लः एक विवेचन, पृ0 – 14–15
5 शैलन्द्र प्रताप सिंह, बज़्म–ए–सुखन, पृ0 – 13–14
6 डॉ0 प्रेम भण्डारी, हिन्दुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायकी, पृ0 – 30
7 चानन गोविन्दपुरी, ग़ज़ल एक अध्ययन, पृ0 – 46
8 ज्ञान प्रकाश विवेक, हिन्दी ग़ज़ल की विकास यात्रा, पृ0 – 108

भौतिकता यानि साक्षात मौजूद है जिसकी जड़ें धरती से जुड़ी हुई हैं। सामाजिक ताना–बाना एवं बंदिशें मानसिक क्रियाशीलता और मूर्ति प्रेमिका के स्वरूप का महत्वपूर्ण प्रतीक है।[9] जब यह धार्मिक रूप ग्रहण करती है तो मन्दिर या मकबरे से गहरे भावात्मक सम्बन्ध का रूप धारण कर लेती है इसी प्रकार पारिवारिक जीवन और राष्ट्रीय भावना के अर्न्तगत परिणत हो गई।

शुरू के दौर से ही विशेष रूप से ग़ज़ल में आम–तौर पर जिन क्रियाओं का प्रयोग होता है वो पुल्लिंग में होती है। महबूब स्त्री है या पुरुष इसका भेद उर्दू शायरी में नहीं खुलता है। महबूब ईश्वर भी हो सकता है, दोस्त भी और स्त्री भी या स्वयं का दिल भी हो सकता है। व्यापकता के स्तर पर सम्बोधन करने के लिए और पर्दादारी में बात करने के लिए क्रिया का पुल्लिंग होना ही ठीक रहता है। पुल्लिंग क्रिया ही व्यापक सत्य के लिए उचित होती है। ग़ज़ल की विषय–वस्तु के सन्दर्भ में यह विस्तृत रूप से विचार किया जाय तो ग़ज़ल में शायद ज़िन्दगी का कोई भी ऐसा पहलू नहीं है जिस पर नहीं लिखा गया हो। कहा जाता है ग़ज़ल इश्क़ की अभिव्यक्ति है परन्तु वास्तव में ग़ज़ल में इश्क़ के दोनों ही पहलू अर्थात् संयोग–वियोग के साथ इंसान का ईश्वर के प्रति लगाव भी समाहित है। महबूब के प्रति इश्क़ (लौकिक प्रेम) को 'इश्क़े–मजाज़ी' और ब्रह्म के प्रति इश्क़ (ईश्वर के प्रति प्रेम) को 'इश्क़े–हक़ीक़ी' कहा गया है।

उर्दू ग़ज़ल में विषयवस्तु की व्यापकता एवं विविधता का एक मुख्य कारण यह भी है कि इसे सभी प्रांतों, सभी धर्मों और सभी मतों और भाषाओं के बोलने वाले विद्वानों ने अपने पूर्ण ज्ञान और अनुभव से सजाया–संवारा है एवं इसके उत्थान में अपना योगदान दिया है।[10] ग़ज़ल काव्यात्मक स्वभाव की बेचैन अभिव्यक्ति है जो मन से मन की गति का बोध करवाती है। इसमें सबसे तेज गति सौन्दर्य की मानी गयी है। सौन्दर्य में बिम्बात्मकता, अलंकारिकता स्वाभावोक्तिता होती है। भाव और रूप का सुन्दर सामंजस्य ग़ज़ल को आकर्षण प्रदान करता है।

कल्पना भावों अथवा अनुभूतियों को पुष्ट करती है उन्हें आकर्षण प्रदान करती है। ग़ज़लों में कवि अपना दुःख–दर्द, हर्ष–उल्लास, ग्लानि–क्षोभ, प्रायश्चित, देश–काल तथा परिस्थितियों के प्रति आत्म–दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है। ग़ज़लें शुद्ध भावात्मक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है। उनमें अनुभूति की आवेशमयी तीव्रता के दर्शन होते हैं जो भाव–सम्प्रेषणीयता को खोए बिना ही मूल आवेग की शक्ति के साथ प्रस्तुत की जाती है और प्रबुद्ध पाठक को प्रभावित करती है।

ग़ज़लों के बादशाह जिगर मुरादाबादी ने अपनी एक ग़ज़ल के माध्यम से प्रेम–काठिन्य की अनुभूति इन शब्दों में कराई है –

'हम इश्क़ के मारों का इतना ही फसाना है।
रोने को नहीं कोई, हंसने को ज़माना है।।'[11]

हुस्न, इश्क़ और शराब की विषय–वस्तु के अतिरिक्त भी कई ग़ज़लें ऐसी हैं जिनमें इंसानी ज़िन्दगी का दुख–दर्द और ज़िन्दगी की सच्चाइयों का समावेश हुआ है और श्रोताओं ने भी इन ग़ज़लों को अधिक सराहा है।

9. वज़ीर आगा– उर्दू शायरी का मिजाज, पृ0 210–211
10. डॉ0 प्रेम भण्डारी– हिन्दुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायकी, पृ0 – 31
11. रोहिताश्व अस्थाना, हिन्दी ग़ज़ल : उद्भव और विकास, पृ0 – 36–37

'रंजिश ही सही दिल ही दुखाने के लिए आ।
आ फिर से मुझे छोड़ कर जाने के लिए आ।।' (अहमद फ़राज़)
'कोई पास आया सवेरे–सवेरे।
मुझे आजमाया सवेरे–सवेरे।।' (सईद राही)

किसी भी विषय को ग़ज़ल अपने आप में समेटने के लिए प्रतीकों एवं बिम्बों का सहारा लेती रही है और यह ग़ज़ल की मुख्य विशेषता भी है कि वो किसी बात को प्रत्यक्ष ना कह कर परोक्ष रूप में इशारों एवं संकेतों में करती है। उर्दू ग़ज़लों में हिन्दू धर्म की कथाओं एवं प्रतीकों का सन्दर्भ लेकर भी शेर प्रस्तुत किए जाते हैं –

'हर लिया है किसी ने सीता को।
ज़िन्दगी है के राम का वनवास।। (फिराक़ गोरखपुरी)

जीवन के दर्शन का वर्णन भी कुछ शेर में मिलते हैं –

'जिसको जाना ही नहीं उसको खुदा क्यूं माने।
और जिसे जान चुके हो वो खुदा कैसे हो।। (शहज़ाद अहमद)[12]
'खुदा के नाम पर दस्त–ओ–ग़रेबा है खुदा वाले।
बहुत है जिस क़दर ज़िक्र–खुदा, खौफ–खुदा कम है।।'

यहाँ 'खुदा वाले' से भाव हिन्दू, सिक्ख और मुसलमान है। देश की आजादी के लिए भी शायर ने शेर प्रस्तुत किए हैं –

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है ज़ोर कितना बाजु–ए–क़ातिल में है।।'

परिवार नियोजन व नशाबन्दी आजकल के प्रमुख विषय हैं इस पर भी कुछ शेर प्रस्तुत किया गया –

'तोड़ा कमरे–शाख़ को कसरत ने समर की।
दुनिया में गिराबारि–ए–औलाद गज़ब है।।' (जौक़)

नशाबन्दी

'ए जौक़, देख! दुखतरे रज को न मुँह लगा।
छूटती नहीं है मुंह से ये काफ़िर लगी हुई।।'

ग़ज़ल वो जानदार बूटा है जो हर प्रकार की जमीन में उगने और हर मौसम में विकसित और प्रफुल्लित होने का सामर्थ्य रखता है। जैसे मनुष्य की विचारधारा में परिवर्तन आता रहा, ग़ज़ल ने भी हर दौर के असर को कुबूल किया।[13]

12. डॉ0 प्रेम भण्डारी, हिन्दुस्तान में ग़ज़ल गायकी, पृ0 – 35–36
13. चानन गोविन्दपुरी, ग़ज़ल एक अध्ययन, पृ0 – 48–49

आज जंगलो की सीमाएँ सिमटती जा रही हैं जिससे पर्यावरण की समस्याएँ सामने आ रही हैं जिसे एक अलग अंदाज में प्रस्तुत किया गया है–

'रंग पेड़ों का क्या हुआ देखो।
कोई पत्ता नहीं हरा देखो।। (मख़्मूर सईदी)

इंसान के संघर्षमयी दास्तान पर शायर लिखते है –

'हम परवरिशे लोहे–क़लम करते रहेंगे।
जो दिल पर गुज़रती है रक़म करते रहेंगे।।' (फ़ैज अहमद फ़ैज)
'जो दास्तां मिटाई थी ज़्यादा लिखी गयी।
जितने हमारे हाथ तराशे, क़लम बने।।' (सैफ़ जुल्फी)[14]

दुनिया में दोस्ती व दुश्मनी की वफा और बेवफाई पर भी शेर बहुत हैं–

'दोस्त बन बन के मिले मुझको मिटाने वाले।
मैंने देखे हैं कई रंग बदलने वाले।। (सुदर्शन फाकिर)

'तेरी बातें ही सुनने आए।
दोस्त भी दिल ही दुखाने आए।।'[15] (अहमद फ़राज)

जैसे ज़िन्दगी में परिवर्तन होते रहते हैं उसी प्रकार ग़ज़ल के विषयों में तब्दीली आती है। ग़ज़ल में कभी कोई भी बात विस्तार से नहीं कही जाती चाहे वह किसी भी भाषा व विषय से सम्बन्धित हो बल्कि यह तो कम से कम शब्दों में गागर में सागर भरने वाली बात होती है। संगीत को त्रिवेणी (संगम) कहा जाता है जिसमें तीन बातें अनिवार्य हैं – शब्द, तर्ज़ और आवाज़। ग़ज़ल की लोकप्रियता इस बात की पुष्टि करती है कि अच्छे शब्द के साथ अच्छी तर्ज़ और मधुर आवाज अत्यन्त अनिवार्य है। ग़ज़ल अब आजाद है जिसनें कई रास्ते निकाले हैं और नित नयी राहों की तलाश में रहती है। आज इसका मिज़ाज खुला है स्वच्छंद है, चंचल भी है और गंभीर भी। आज यह नये लिबास में है जो गूढ़ बातें करती है तो नये अंदाज़ में और नयी अदाओं के साथ राग–रागिनियों में भी लिपटी हुई होती है।[16]

ग़ज़ल के जन्म से लेकर वर्तमान समय तक इसमें सबसे ज्यादा प्रयोग तथा परिवर्तन हुए। इसके बावजूद यह आज भी जीवंत है और उसकी लोकप्रियता किसी भी प्रकार कम नहीं हुई है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. रोहिताश्व अस्थाना, हिन्दी ग़ज़ल, उद्भव और विकास, सुनील साहित्य सदन 3320–21 जटवाड़ा, दरियागंज, नई दिल्ली–110002, संस्करण–2010
2. मंसूद हसनः हमारी शायरी, 1942

14. डॉ0 प्रेम भण्डारी, हिन्दुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायकी, पृ0 – 38–42
15 वही, पृ0 – 37
16. कृष्ण स्वरूप, ग़ज़ल एवं ग़ज़ल गायकी, छायानट, पृ0 – 43

3. चानन गोविन्दपुरी, ग़ज़ल एक अध्ययन, प्रकाशक सीमान्त प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली–110002, संस्करण–1980
4. हलधर प्रसाद 'इन्दु' ग़ज़ल अंक, ग़ज़लः एक विवेचन, जनवरी 1978
5. शैलन्द्र प्रताप सिंह, बज़्म–ए–सुखन, अनामिका प्रकाशन, 52 तुलाराम, इलाहाबाद प्रथम संस्करण–2005
6. प्रेम भण्डारी, हिन्दुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायकी, राधा पब्लिकेशन्स नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1992
7. ज्ञान प्रकाश विवेक, हिन्दी ग़ज़ल की विकास यात्रा, हरियाणा ग्रन्थ अकादमी पंचकूला–2006, 2012 (द्वितीय संस्करण)
8. वज़ीर आगा– उर्दू शायरी का मिजाज, जटवाड़ा दरियागंज, दिल्ली, 1991
9. अनिरूद्ध सिन्हा, हिन्दी ग़ज़ल का सौन्दर्यात्मक विश्लेषण, जवाहर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली–110016, प्रथम संस्करण–2009
10. कृष्ण स्वरूप, ग़ज़ल एवं ग़ज़ल गायकी, छायानट अप्रैल–जून 1992 अंक–61, उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी